मं० ग्रो॰ वि॰/रोहतक/ 76-87/18680.—चूंकि हरियाणा के राज्यान की राय है कि मै० पारने विस्तुट प्रा॰ लि॰, सांखोल, वहादुरगढ़, के श्रमिक श्री रणबीर सिंह, मार्फत महानिवन, बिस्तुट प्रा॰ लि॰, जाग्रती वर्करज युनियन, सांखोल, बहादुरगढ़ (रोहतक) तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट कः ना वांछनीय समझते हैं;

सिलये, म्रज, मीद्योगिक विज्ञाद मित्रियम, 1947, को धारा 10 को उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्त्यों का प्रयोग करने दूर हरियाणा के राज्याल इसके द्वारा सरकारी मित्रिस्वना सं० 9641-(1)-अम 78/32573, दिनांक 6 नजम्बर, 1970, के साथ गठित मरकारी मिध्रमुचना की धारा 7 के मधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादमस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे जिल्ला मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हैतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमित में बीच या तो विज्ञादगस्त मानता है या उन्त विज्ञाद से सुसंगत मध्यवा सम्बन्धित है:---

क्या श्री रणबीर मिंह की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं गैर-हाजिर हो कर नौकरी से लियन खोया है? इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किम राहत का हक्दार है ?

सं० मो०वि०/एफ०डी०/36-87/18687.--चूंकि हरियाणा के राज्यशाल की राय है कि मै० जै०वी इलक्ट्रोनिक्स लि०, प्लाट नं० 163-164, सैक्टर 24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्रो हेमन्त कुम र तिवारी, मार्फत महा सचिव, इण्टक जिला परिषद्, 1-ए/119, एन०प्राई०टी० फरीदाबाद तया प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीधोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायित ग्रंथ हेतु तिर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, प्रबं, भौदोगिक विवाद, प्रधितियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई जित्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त प्रवित्यम की धारा 7-क के अवीन गठित अधिकिरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अभिकों के बीच पा तो विवादप्रस्त मामला/मामले हैं अववा विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला/मामले हैं त्यायिन में प्रवं पंचाट तोन मास में देने हैंन निर्दिष्ट करने हैं :--

क्या श्री हेमन्त कुमार तिवारी की सेवा सनाप्त की गई है या उसने हुवयं गैर-हाजिर हो कर नौकरी से लियन खोबा है, इस विन्दू पर निर्णय के फलस्वरूप वह कित राहत का हकदार है ?

सं ग्रो० वि०/एफ डी/39-87/18694.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० फरीदाबाद ग्राटोमोटिव कम्पो-नेन्टस, प्लाट नं 172, सैक्टर 24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्रो वो०एन० ग्रातन्द राजन, मार्फत हिन्द मजदूर समा, 51-ए, सैक्टर 6, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बार लिखित मामने के यम्बन्ध में कोई श्रीछोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, भव, मोद्योगिक विवाद मित्रिनियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई कित्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त ग्रांधिनियम की घारा 7-क के मधीन गठित भौद्योगिक मित्रिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादणस्त मामला/मामले हैं अथवा विवाद से मुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं, स्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेनू निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री वी० एन० ग्रानस्य राजन की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्तयं गैर-हाजिर होकर नौकरी खोई है? इस बिन्द पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार हैं?

म्रार० एस० ग्रग्नवाल,

उप-सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग।